उत्तर सूचिका

1. (क) साहिल

2. साहिल और बेला का स्कूल पाँचवीं तक ही था। इसलिए उन्हें दूसरे स्कूल में जाना पड़ा।

3.

मुझे भेज देंगे।
मुझे अजमेर भेज देंगे।
मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे।
पिताजी मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे।

4.

स्थान
तारीख

प्रिय बेला

कैसी हो बेला? मैं बस ठीक हूँ।बहुत दिनों से सोच रहा था कि तुम्हें एक पत्र लिखूँ। आज ही लिखने का समय मिला।यहाँ होस्टल में मेरा मन बिलकुल नहीं लग रहा है। घर से दूर.. गाँव से दूर .... तुम से दूर.... अकेला... अकेला! हम कितने खुश थे न? साथ-साथ खेलना, स्कूल जाना, बीरबहूटियों को खोजना, बस... मस्ती ही मस्ती | अब कुछ नहीं रहा । इधर भी मेरे कुछ दोस्त हैं। लेकिन...

घर में सब सकुशल है न ? माँ-बाप को प्रणाम। जवाब ज़रूर लिखना।

तुम्हारा अपना
हस्ताक्षर
नाम

पता

5.

सीन-1

स्थान - स्कूल का मैदान

समय - सुबह दस बजे

पात्र - बेला और साहिल। लगभग ग्यारह साल के दो बच्चे। दोनों वर्दी पहने हैं।

दृश्य - बेला और साहिल हाथ में रिपोर्ट कार्ड लिए मैदान के बेंच पर बैठे हैं।

बेला : साहिल अब तुम कहाँ पढ़ोगे ?

साहिल: और तुम कहाँ पढ़ोगी बेला ?

Thiruvananthapuram Educational District

बेला : मेरे पापा कह रहे थे कि तुझे राजकीय कन्या पाठशाला में पढ़ाएँगे और तुम ?

साहिल: मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे। वहाँ एक हॉस्टल है, घर से दूर वहाँ अकेला रहूँगा।

बेला : क्यों साहिल ?

साहिल: पता नहीं क्यों।

बेला : तो यानी कि अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?

साहिल: नहीं। तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखाना।

6. लोहा लेना

7. बड़े- बड़े महारथी का

8. अधर्म के विरुद्ध उठनेवाली अकेली निहत्थी आवाज़ को बड़े- बड़े महारथी अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं।

9. तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ!

10.

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के विख्यात कवि श्री.धर्मवीर भारती की 'टूटा पहिया' नामक कविता से ली गई हैं। इसमें कवि कहते हैं कि महाभारत युद्ध में बड़े-बड़े महारथी अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अभिमन्यु की अकेली आवाज़ को कुचल दिए थे। वर्तमान समाज में भी यदि शोषक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति से उनके विरुद्ध खडे होनेवाले अकेले,असहाय व्यक्ति पर प्रहार करेंगे तो लघु मानव उसके लिए सहारा बन जाएँगे।

11.हताशा से एक औरत बैठा करती थी।

12. अपरिचित

13. किसी व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट से जानना ही जानने का असली आधार है। मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना ज़रूरी है।

14.

सड़क पर घायल पड़े व्यक्ति को	सहायता की ज़रूरत है।
हम जानते हैं कि	घायल व्यक्ति मुसीबत में है।
किसी व्यक्ति को जानने का मतलब	उसकी हताशा, निराशा और संकट को जानना है।
हताश व्यक्तियों की सहायता करना	हमारा कर्तव्य है।

Thiruvananthapuram Educational District

15. छाछ

16. वह

17. मिहिर और मोरपाल के बीच का सौदा था खेल घंटी में खाने की अदला– बदली का।

18. बाँछें खिल जाना

19.

तारीख आज भी स्कूल में हमने खूब मस्ती की।आज मैंने मोरपाल से एक सौदा भी किया, खेल घंटी में खाने की अदला–बदली का ।वह जो छाछ लाता है न....सो मेरी कमज़ोरी है। अरे वाह! कितना स्वादिष्ट है वह! मेरे खाने के डिब्बे में राजमा देखते ही मोरपाल की बाँछें खिल जाती हैं।मैंने माँ से कह रखा है कि रोज़ खाने के डिब्बे में राजमा ही रखें।तो मेरा राजमा उसका और उसका छाछ मेरा।

Thiruvananthapuram Educational District